इइ चतुर्थ - वर्ग 15

8. 'ध्रुवस्वामिनी' में चित्रित प्रधान समस्या का वर्णन करते हुए यह बताइए कि 'प्रसाद' ने उसका समाधान किस रूप में प्रस्तुत किया है।

9. अपनी पाठ्य पुस्तक में संकलित किसी एक एकांकी की एकांकी के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

A (Printed Pages 4)

Roll. No. _____

A-243

शास्त्रि-प्रथम-वर्ष परीक्षा, 2015

आधुनिक विषय

प्रथम-हिन्दी

समय : तीन घण्टे **पूर्णांक : 100**

निर्देश : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वर्ग से **एक** प्रश्न कीजिए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : 4×10=40

(क) ज्ञानाश्रयी शाखा के किसी एक कवि का नामोल्लेख कीजिए।

(ख) प्रेमाश्रयी शाखा के किसी एक कवि का नाम लिखिए।

(ग) भूषण के काव्य में किस रस की प्रधानता है।

(घ) घनानंद रीतिकाल के किस धारा के कवि हैं?

(ड.) रीतिकाल के किसी रीति-बद्ध कवि का नामोल्लेख कीजिए।

(च) एकांकी कला की दृष्टि से 'भोर का तारा' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

(छ) एकांकी के तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

(ज) 'सूखी डाली' एकांकी की एकांकी के तत्त्वों के आधार पर मीमांसा कीजिए।

(झ) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की नायिका का चरित्र चित्रण कीजिए।

(ञ) 'कोमा' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

प्रथम-वर्ग 15

2. निम्नलिखित पद्य अवतरण की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :

रावरे दोष न पायँन को, पगधूरि को भूरि प्रभाउ महा है।
पाहन तें बन बाहन काठ को कोमल है, जल खाइ रहा है।
पावन पायँ कै नाव चढ़ाइहौ, आयसु होत कहा है।
तुलसी सुनि केवट के बर बैन, हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है।

3. मधुबन तुम क्यौं रहत हरे।
बिरह-वियोग स्याम सुन्दर के, ठाढ़े क्यौं न जरे।
मोहन बेनु बजावत द्रुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरू जड़-जंगम, मुनि मन ध्यान टरे।
वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि फिरि पहुप धरे।
सूरदास प्रभु विरह-दवानल, नरव सिखलौं न जरे।।

द्वितीय - वर्ग 15

4. कबीर की लोकप्रियता पर प्रकाश डालिए।

5. जायसी की काव्यगत विशेषताओं की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

तृतीय - वर्ग 15

6. निम्नलिखित गद्य अवतरण की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :

ब्राह्मण का धर्म है कि वह नास्तिक पुरूष को आस्तिक बनाए। उसका धर्म है कि वह जन-जन से वर्णाश्रम धर्म का पालन कराये। जहाँ स्वेच्छा से यह संभव नहीं, वहाँ ब्रह्म-शक्ति और धर्मनीति से यह संभव करना चाहिए।

7. रानी, तुम भी स्त्री हो! क्या स्त्री की व्यथा न समझोगी? आज तुम्हारी विजय का अन्धकार तुम्हारे शाश्वत स्त्रीत्व को ढँक ले, किन्तु सबके जीवन में एक बार प्रेम की दीवाली जलती है। जली होगी अवश्य, तुम्हारे भी जीवन में आलोक-महोत्सव आया होगा, जिसमें हृदय, को पहचानने का प्रयत्न करता है, उदार बनाता है और सर्वदान करने का उत्साह रखता है।